'पवित्रता' का आध्यात्मिक रहस्य

बी.के. किशनदत्त, शान्तिवन

संसार में विज्ञान, राज्य, धन, पद, आदि की जितनी भी भौतिक शक्तियाँ हैं उन्हें हम जानते हैं। उनकी तरफ प्रायः सभी का ध्यान रहता है। उन शक्तियों को प्राप्त करने की प्रतिस्पर्धा की आंधी की तेज हवाओं के स्पर्श के प्रभाव से आज हर मनुष्य कमोवेश प्रभावित है। लेकिन एक शक्ति ऐसी भी है जिसको बहुत कम लोग जानते हैं। जो जानते है उनमें से भी बहुत कम लोग ऐसे हैं जो उस शक्ति के महत्व को जानकर उसका निरन्तर विकास कर उसका उपयोग सृजनात्मकता में करते हैं। बहुत कम लोग ऐसे हैं जो मानव जीवन की अनन्त सम्भावनाओं के उच्चतम शिखर की ऊँचाईयों का आनन्ददायी अनुभव करने का लक्ष्य बनाकर चलते हैं। वह शक्ति है 'पवित्रता' की शक्ति। अगर दूसरे शब्दों में कहा जाये तो असलियत यह है कि पवित्रता की शक्ति ही सबसे बडी शक्ति है। इस शक्ति की तुलना में सभी शक्तियाँ गौण हैं। पवित्रता की शक्ति कैसे सबसे बडी शक्ति है? क्या इसका कोई वैज्ञानिक आधार है?

पवित्रता की शक्ति के गहन अर्थ को हम समझ लें तो वैज्ञानिक आधार भी स्वतः स्पष्ट हो जायेगा। सम्पूर्ण पवित्रता का गहन अर्थ कि जो चीज जैसी है उसे काल,देश और परिस्थिति के अनुसार वैसा ही देखना। इसका अर्थ है कि एक ऐसी आन्तरिक योग्यता की प्राप्ति जिसके द्वारा जो चीज यथार्ततः जैसी है उसे ठीक वैसा देखा, समझा और अनुभव किया जा सकता है। पवित्रता की इस मनोवैज्ञानिक व दार्शनिक परिभाषा में सबसे बडी शक्ति के होने का सार तत्व समाया हुआ है। आत्मा में यदि यह योग्यता आ जाये तो जीवन में कुछ और प्राप्त करने के लिये शेष नहीं रहता। बाकी जो कुछ भी है वह इसी के तह में ही छिपा हुआ होता है। इस स्थिति में आत्मा प्रकृति के सभी प्रकार के आकर्षणों से मुक्त होती है। प्रकृति के आकर्षण से मुक्त आत्मा अपनी आत्म-जाग्रति की स्थिति से अगर चाहे तो प्रकृति की प्राप्तियाँ कर सकती है। इस योग्यता के उपयोग द्वारा जो भी आत्मा को अभिष्ट हो वह प्राप्त किया जा सकता है।

इसका विश्लेषण करने से हम यह समझ सकते हैं कि पवित्रता के होने से सर्व शक्तियॉ को कैसे प्राप्त किया जा सकता है। यदि आत्मा में आत्म-संयम है। उसके विचार, भावनाऐं और कर्म श्रेष्ठ हैं, तो उसके अन्तर्जगत में शक्ति का संचय होता है। इस संचित शक्ति का उपयोग यदि आत्मा अपने मन-बुद्धि को एकाग्र करने में करती है तो उसके मन-बुद्धि सहज एकाग्र होते हैं। इसी संचित शक्ति का अगर निरन्तर उपयोग करते चले जायें तो आन्तरिक एकाग्रता का समय एक निश्चित सीमा तक बढ जाता है। सम्पूर्ण जाग्रति के साथ मन-बुद्धि की आन्तरिक एकाग्रता की चरम स्थिति की अनुभूति को लगातार कुछ समय तक अनुभव करते चले जाने से मन-बुद्धि की स्थायी एकाग्रता को उपलब्ध किया जा सकता है। एकाग्रता ही सबसे बडी शक्ति है। एकाग्रता की पृष्ठभूमि में पवित्रता की शक्ति का ही श्रेय रहता है। अपवित्र मन-बुद्धि के द्वारा एकाग्रता की इस सीमा तक पहुँचा ही नहीं जा सकता। इसलिये यह ध्यान देने योग्य बात है कि एकाग्रता की शक्ति की पृष्ठभूमि में पवित्रता की शक्ति की महति भूमिका रहती है। सम्पूर्ण एकाग्रता की ऐसी योग्यता से ही वह आन्तरिक योग्यता (पवित्र दृष्टि) प्राप्त होती है जिसके द्वारा जो चीज जैसी है उसे वैसा ही देखा,समझा और अनुभव किया जा सकता है।

इसलिये ही यह कहा जाता है कि जहॉ पवित्रता है वहाँ शान्ति है, जहाँ शान्ति है वहाँ परमात्मा है, जहाँ परमात्मा है वहाँ सब कुछ है। भावार्थ यह है कि पवित्रता और शान्ति के चरमोत्कर्ष का दूसरा नाम एकाग्रता है। जहॉ यह एकाग्रता है वहाँ परमात्म शक्तियों की अनुभूति है। जहाँ परमात्म -प्राप्तियाँ हैं वहॉ सर्व प्राप्तियाँ स्वाभावतः हैं ही। ऐसी एकाग्रता की शक्ति के इर्द-गिर्द ही सभी प्रकार की शक्तियॉ घूमती हैं। यह एक ऐसी स्थिति बनती है जब पवित्रता और एकाग्रता दोनो मिलकर ओत-प्रोत हो जाती हैं। इसे एकाग्रता की पवित्रता कहें या पवित्रता की एकाग्रता कहें दोनो एक ही बात है। जिस भी दिशा में संकल्पबद्ध होकर एकाग्रता (पवित्रता) का उपयोग किया प्राप्ति के लिये किया जाये उस दिशा में उस शक्ति को अर्जित किया जा सकता है।

ऐसी सम्पूर्ण पवित्रता की स्थिति में आत्मा सम्पूर्ण अनासक्त रहती है। यह अनासक्ति ही सम्पूर्ण ज्ञान का सार तत्व है। सम्पूर्ण पवित्रता (एकाग्रता) से सभी दिव्य गुणों की उत्पत्ति होती है। आत्मा दिव्य गुणों के दिव्य श्रृंगार से आभामान हो जाती है। वस्तुतः यही तो सच्चा श्रृंगार है। पवित्रता से ही सर्व कलाओं का विकास होता है। एकाग्र आत्मा दुःख का

अनुभव नहीं कर सकती। पवित्रता अन्तर के सुख का अनुभव कराती है। सम्पूर्ण पवित्रता में ही सम्पूर्ण अहिंसा समाहित है। पवित्र आत्मा मन्सा-वाचा-कर्मणा किसी को भी दु:ख देकर हिंसा का कर्म नहीं कर सकती।

पवित्रता की शक्ति में ही सच्ची सुरक्षा सन्निहित है। पवित्रता की शक्ति एक सकारात्मक शक्ति है जो नकारात्मक शक्ति से सदा ही शक्तिशाली होती है। जो पवित्र है वह निर्भय है। पवित्रता की आभा अन्य अनेकों को भी सुरक्षित होने का अनुभव कराती है। राखी के पवित्र धागे ब्राह्मणों या बहिनों द्वारा बाँधे जाने का आध्यात्मिक रहस्य क्या है? राखी का धागा हमें पवित्रता की शक्ति का अर्थ बोध स्पष्ट करता है। यह धागा हमें यही प्रेरणा देता है कि पवित्रता की शक्ति से आसुरी शक्तियों पर विजयी बन कर रहना है। पवित्रता ही जीवन की यथार्तता है। यथार्तता ही पवित्रता है। **Purity is reality and reality is purity.** सम्पूर्णता ही सम्पूर्ण पवित्रता है। सम्पूर्ण पवित्रता ही सम्पूर्णता है। **Purity is perfection and perfection is purity.**

ज्ञान के सार तत्व को समझ कर राजयोग के सतत अभ्यास द्वारा आत्मा की सम्पूर्ण पवित्रता को बढाया जा सकता है। यह पवित्रता की शक्ति ही आत्मा की गहरी मूर्छा को तोडने का साधन है। यह पवित्रता की शक्ति ही अमोघ संजीवनी बूटी है। पवित्र चेतना के जाग्रत होने से जन्मों-जन्मों की अपवित्र चेतना की बेहोशी (मूर्छा) टूटती है। पवित्रता के दिव्य प्रकम्पनों का संचार हमें शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ्य बनाता है। ऐसी पवित्रता रूपी संजीवनी बूटी (औषधि) के सेवन से आत्मा जन्म-जन्मान्तर के लिये सुख-शान्ति से सम्पन्न बन जाती है। पवित्रता रूपी औषधी आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की सभी प्रकार की औषधियों से श्रेष्ठ है। इसकी कोई तुलना ही नहीं है। पवित्रता का आधार यथार्त ज्ञान है। अज्ञान (अपवित्रता) सबसे बडी बुराई है, जिससे ही सभी बुराईयों का जन्म होता है। तथ्यात्मक बात यह है कि संसार में सबसे अच्छी चीज पवित्रता है।

अत: आइये ! हम पवित्रता के पर्व राखी पर पवित्रता का धागा बाँधने के साथ साथ पवित्रता की धारणा (प्रशिक्षण) द्वारा अपने मन-बुद्धि को साधने की तपस्या कर स्वयं को शक्तिशाली बनायें। अनेक जन्मों से दु:खी थकी आत्माओं को पवित्रता की सुवास से महका कर उनके जीवन को आल्हादित बनाने की सेवा ही सर्वोत्तम सेवा है।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com